

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

ज्वालामुखी योग

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं ज्वालास्वरूप शक्तिशाली तपस्वी हूँ।

- तपस्या ही हमारे जीवन का श्रृंगार है। तपस्या ही सर्वगुणों व शक्तियों को हममें भरेगी। तपस्या ही हमारी सम्पन्नता और सम्पूर्णता को समीप लायेगी। इसलिए हम अपनी तपस्या को बढ़ाएं। अपने योग को ज्वालामुखी योग बनाएं।

योगाभ्यास - पांच स्वरूपों का अभ्यास करते हुए स्वयं को किसी एक स्वरूप पर एकाग्र कर लें और शक्तिशाली ज्वाला स्वरूप अवस्था का अनुभव करें...।

- मैं महातपस्वी विश्व के गोले के ऊपर बैठकर तपस्या कर रहा हूँ... मैं परमधाम की बीजरूप ज्वाला स्वरूप स्थिति में स्थित हूँ... और विश्व को सुख-शांति व पवित्रता की शक्तिशाली किरणें दे रहा हूँ...।

- मैं फरिश्ता अंतरिक्ष में हूँ... सभी ग्रह मेरे चारों ओर परिक्रमा कर रहे हैं... पवित्रता के सागर बाबा से मेरे ऊपर पवित्र किरणें आ रही हैं जिससे मैं सूर्य की तरह तेजस्वी होता जा रहा हूँ... और मुझसे पवित्रता का प्रकाश सभी ग्रहों को जा रहा है... सभी ग्रह पावन होकर अपनी मूल स्थिति में आते जा रहे हैं...।

धारणा - व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय से मुक्त बनें।

- बाबा ने इस सीजन में हमें बार-बार संकल्प और समय के खजाने को सफल करने की प्रेरणा दी है। संगमयुग के अपने इन अमूल्य खजानों को यदि हम व्यर्थ गंवायेंगे तो इसका खमियाजा हमें ही भुगतना पड़ेगा। इसलिए परम सद्गुरु की आज्ञा मानें और व्यर्थ से स्वयं को पूर्णतः मुक्त कर लें।

चिंतन - व्यर्थ की सम्पूर्ण आहूति

- कहां-कहां अब तक व्यर्थ हमारे अंदर जिंदा है?

- व्यर्थ के अब तक मेरे अंदर जिंदा रहने के क्या कारण है?

- व्यर्थ से मुझे क्या-क्या नुकसान हो रहा है?

- कैसे हो व्यर्थ की सम्पूर्ण आहूति?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! प्यारे बापदादा ने कहा है कि आप जो सकाश देने की सेवा कर रहे हो, वह आत्माओं तक पहुंचने लगी है, लेकिन अभी उन्हें यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि ये किरणें कहां से आ रही हैं इसलिए अब अपने योग को ज्वालामुखी योग बनाओ। बाबा की प्रेरणानुसार हम अपने योग की ज्वाला को और प्रज्वलित करें और विश्व के कोने-कोने तक अपनी लाइट और माइट की किरणें पहुंचाएं।



रक्सौल। गोपीराम धनोठिया को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.पूनम बहन एवं ब्र.कु.सोनी बहन।



सतारा। 'विश्व शांति अभियान' का उद्घाटन करते हुए पुलिस अधीक्षक अमोल तांबे, डॉ.किशोरी कोट्रे, ब्र.कु.कांचन बहन एवं ब्र.कु.शांता बहन।

दूसरा सप्ताह

स्वमान - मैं तीव्र पुरुषार्थी हूँ।

- जब वक्त कम हो और मंजिल दूर हो तो एक समझदार व्यक्ति अपनी गति बढ़ा देता है ताकि समय रहते वह अपनी मंजिल पर पहुंच जाए। इसके विपरीत यदि व्यक्ति लापरवाह बना रहे, आलसी और अलबेला बना रहे, अपने चिरपरिचित मंथर गति से ही चलता रहे तो पाश्चाताप के सिवाए और कुछ भी हासिल नहीं होगा।

योगाभ्यास - सारे कल्प तो हम साकार लोक में ही रहे हैं और आगे भी रहेंगे... अब हम ऊपर रहे सूक्ष्मवतन में और मूलवतन में... सूक्ष्मवतन में अपनी ब्रह्मा माँ के साथ बातें करें... सैर करें... खेलें और उनसे संपन्न-सम्पूर्ण फरिश्ता बनने के टिप्स लें... इसी प्रकार मूल वतन में अपने प्राणेश्वर पिता के साथ अपने अनादि स्वरूप का अनुभव करें... स्वयं को सर्वगुणों, शक्तियों व वरदानों से भरपूर करें...

इन दोनों लोकों में रहने से अर्थात् ऊपर रहने से पुरुषार्थ का ग्राफ भी ऊपर जायेगा, तीव्र होगा...।

- पुरुषार्थी शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हों... मैं आत्मा पुरुष इस देह रूपी रथ पर विराजमान हूँ... मैं इस रथ का मालिक हूँ... यह रथ मेरा मालिक नहीं है... मैं जहां चाहूँ... जैसे चाहूँ... इस रथ को चलाऊँ... रथ मुझे नहीं... लेकिन मैं रथ को चलाने वाला हूँ... मन-बुद्धि रूपी लगाम मेरे हाथ में है... मैं सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों से सजे इस शरीर रूपी रथ का राजा हूँ... मैं श्रेष्ठ पुरुषार्थी और तीव्र पुरुषार्थी हूँ...।

धारणा - व्रत से वृत्ति परिवर्तन

- जैसे भक्तिमार्ग में हम अन्न और जल का व्रत रखते थे और चाहे कितनी भी भूख व प्यास क्यों न लगे, हम अन्न और जल को ग्रहण नहीं करते थे, क्योंकि व्रत रखा हुआ होता था। मन में रहता था कि यदि अन्न व जल को ग्रहण करेंगे तो व्रत भंग हो जायेगा और हमारी मनोकामना पूर्ण नहीं होगी। वैसे ही अब व्यर्थ

संकल्पों और अपनी कमी-कमजोरियों से दूर रहने का व्रत लें तभी वृत्ति परिवर्तन होगी और पुरुषार्थ में तीव्रता आयेगी।

चिंतन - तीव्र पुरुषार्थ क्या है?

- वर्तमान समय तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता क्यों है?

- द्वीले पुरुषार्थी, साधारण पुरुषार्थी और तीव्र पुरुषार्थी किसे कहेंगे? तीनों में अंतर क्या है?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! पिछले सीजन की सभी मुरलियों में बाबा ने जिस एक बात के लिए हमें लगातार प्रेरित किया है वो है - तीव्रपुरुषार्थ। बाबा ने कहा - 'किसी भी आत्मा को कोई सहयोग चाहिए, वह दिल से सहयोग दे, तीव्र पुरुषार्थी बनाते चलो। हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी हो। नंबरवार नहीं, तीव्र पुरुषार्थी। कम से कम अपने सम्पर्क में रहने वाले, आने वाले हर स्थान तीव्र पुरुषार्थी स्थान हो। यही संकल्प हर एक रखे और फिर बापदादा इसकी रिजल्ट देखेंगे।' तो तीव्र पुरुषार्थ को अंडरलाइन करें।



सीतामढ़ी। 'ट्रेवल एवं टूरिज्म प्रभाग' द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् पर्यटक मंत्री सुनील कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मधु बहन एवं ब्र.कु.कमलेश बहन।



वालाजी रोड, सुरत। 'स्नेह-मिलन' के पश्चात् समूह चित्र में हैं पुलिस अधिकारियों के साथ ब्र.कु.नीरू बहन एवं ब्र.कु.स्मिता बहन।



विकाराबाद। एल.आई.सी. के अधिकर्ताओं को राजयोग का प्रशिक्षण देते हुए ब्र.कु.मधु बहन



सिद्धपुर। ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.विजय बहन, ब्र.कु.जसु बहन तथा अन्य।

अपना लक्ष्य... पृष्ठ 7 का शेष

5. सामाजिक - हर व्यक्ति और संगठन को कुछ सामाजिक जिम्मेदारियां हैं, जिनको न किए जाने पर समाज टूटने लगता है।

6. आध्यात्मिक - हमारे जीवन मूल्य नैतिकता और चरित्र को दर्शाते हैं।

इनमें से कोई भी तिली जगह से छिंसक जाये तो हमारे जीवन का संतुलन डगमगा जाता है। थोड़ा समय निकालकर सोचिए, अगर इन छह में से कोई एक तोलिन न रहें तो जीवन कैसा होगा?

संतुलन - सन् 1923 में दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में से आठ लोग मिले। अंदाजा लगाया गया कि उनकी संपत्ति का जोड़ अमरीकी सरकार को उस समय की कुल संपत्ति से भी ज्यादा थी। इन लोगों से कौन जानता था कि जीविका कैसे कमाई जाती है और दौलत कैसे जोड़ी जाती है। और 25 साल के बाद इनके साथ क्या हुआ।

सबसे बड़ी कंपनी के मालिक, 'चार्ल्स शॉव' आधार की पूंजी पर पांच साल तक जिए और फिर वे दिवालिया होकर मर गये।

सबसे बड़ी गैस कंपनी के प्रेसिडेंट, हॉवर्ड हब्सन' पागल हो गये।

एक बड़े व्यापारी आर्थर क्युटन दिवालिया होकर मर गये।

न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज के प्रेसिडेंट रिचर्ड हिट्टनी को जेल जाना पड़ा।

वॉल स्ट्रीट के सबसे बड़े सट्टेवाज जेसी लिवरमोर क्रूसर ने आत्महत्या कर ली।

ये लोग पैसा कमाने में तो माहिर थे, लेकिन यह भूल गये थे कि जिंदगी को कैसे बनाया जाए। ऐसी ही कहानियां लोगों के मन में भ्रम डालती हैं कि पैसा ही सब बुराईयों की जड़ है। यह सच नहीं है। इनकी समस्याओं की वजह पैसा नहीं था। पैसा भूखे को खाना, गरीब को दवाई और जरूरतमंद को कपड़ा देता है। लेकिन पैसा सिर्फ लेन-देन का जरिया है। दरअसल, उन्होंने पैसा कमाने के लिए जिंदगी की बाकी पांच तिलियां की जरूरत का नजरअंदाज किया, और यही उनके पतन का कारण बना। हमें दो तरह की शिक्षा चाहिए। एक वह जो हमें रोजी-रोटी कमाना सिखाए, दूसरी वह जो हमें जीने का ढंग सिखाए।

कुछ ऐसे लोग हैं जो अपने काम में इतने व्यस्त होते हैं कि वे अपने परिवार सेहत और सामाजिक जिम्मेदारियों को नजरअंदाज कर देते हैं। मजे की बात यह है कि उनसे पूछने पर कि वे ऐसा क्यों करते हैं। उनका जवाब होता है कि वे यह सब अपने परिवार के लिए हो तो कर रहे हैं।

जब हम घर से निकलते हैं तो हमारे बच्चे सो रहे होते हैं, जब हम घर लौटते हैं तब भी वे सो रहे होते हैं, बीस साल बाद हम पाते हैं कि वे सभी हमें छोड़कर चले गए हैं।

सेहत - पैसा कमाने के चक्कर में हम अपनी सेहत खो बैठते हैं और खोई हुई सेहत को पाने के चक्कर में अपना पैसा इस तरह पैसा भी चला जाता है और सेहत भी।

सामाजिक दायित्व - पैसा कमाने के चक्कर में हम अपने सामाजिक दायित्वों को नजरअंदाज करते हैं और समाज में गिरावट आने देते हैं। हम यह नहीं सोचते कि कितने दिन खुद भी इस हालत के शिकार बन जायेंगे।

अपने लक्ष्यों को कैसे जांचें और परखें यह आगे बतायेंगे। -क्रमशः